उपसंहार

संगीत एक प्रयोगधर्मी और सर्वाधिक अमूर्तकला है जो अनादि और अनन्त है । संगीत मानव मन की सुख-दुख, प्रेम, वात्सल्य, करूणा आदि सभी प्रकार की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, जिसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । संगीत ऐसी मानवीय कला है जो मानव मन में निर्ममता के स्थान में ममता, कटुता के स्थान पर कोमलता, घृणा के स्थान पर स्नेहिल आकर्षण, भावहीनता के स्थान पर भावुकता की सरिता प्रवाहित करती है ।

किसी भी कला का जब वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है, तब उसमें शोध की शुरूआत होती है । अध्ययनानुकूल वातावरण और अध्ययन की उर्वरा भूमि को पाकर बीज रूपी कई नवीन तथ्य सामने आते हैं, जिन पर शोध कार्य अपेक्षित हैं । किसी प्रणाली, प्रवृत्ति या कृति की व्याख्या तभी शोध कहलाती है जब हम शोध के सर्वांगीण स्वरूप का उद्‌घाटन करते हैं । किसी भी शोध का प्रामाणिक होना आवश्यक है, क्योंकि प्रमाणों के आधार पर शोध का मार्ग प्रशस्त होता है और उसी को विद्वत् समाज में सम्मान प्राप्त होता है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को सप्त भागों में विभाजित किया गया है । प्रथम परिच्छेद के अर्न्तगत विषय उपस्थापन में संगीत का महत्व व उद्देश्य, शोध विषय का उद्देश्य, विषय का परिसीमन आदि का वर्णन है तथा शोध एक अध्ययन में शोध के प्रेरक तत्व, शोध की विधियां, संगीत में शोध का महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय परिच्छेद में संगीत में शोध की प्रवृत्ति व संगीत में शोध के क्षेत्रों को उजागर किया गया है । तृतीय परिच्छेद में तथ्य सामग्री संकलन की प्रविधियां व स्रोतों को प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ परिच्छेद में समस्याओं की उत्पत्ति, स्रोत, प्रकारों तथा समस्याओं से प्रभावित शोधार्थियों के वर्गों को उल्लिखित किया गया है । पंचम परिच्छेद में एकत्रित दत्त सामग्री का संकलन तथा विभिन्न क्षेत्रों के शोधकर्त्ताओं की शोध प्रवृत्ति के कारणों व प्रश्नावली में लिखित समस्याओं के उत्तरों के परिणामों को सारिणी द्वारा दर्शाया गया है । षष्ठ परिच्छेद में प्रश्नावली व साक्षात्कार द्वारा एकत्रित दत्त सामग्री का विश्लेषण व प्रश्नावली में लिखित प्रवृत्ति के कारणों व समस्याओं के प्रतिशत परिणाम व निष्कर्ष दिए गए हैं । सप्तम परिच्छेद में "संगीत में शोध की प्रवृत्ति-एक अनुशीलन" से सम्बंधित सम्भावित सुझाव दिए गए हैं तथा अन्त में उपसंहार दिया गया है ।

संगीत में, शोध की दृष्टि और साधनों की सुविधा के अनुकूल वातावरण के कारण शोध का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । प्रत्येक शोध की नींव समस्या पर रखी जाती है, जिनका उल्लेख किए बिना संगीत में शोध के बारे में कुछ कहना अनुपयुक्त होगा । हर समस्या अपने में एक चुनौती है, जिसका सामना प्रत्येक व्यक्ति को करना पड़ता है । समस्या, शोध की जननी है । अतः बिना किसी समस्या के शोध कार्य संभव ही नहीं है । संगीत में शोध करते समय सामान्य वर्ग, विकलांग वर्ग व सांगीतिक परिवेश से सम्बंधित वर्गों के शोधार्थियों को भिन्न-भिन्न विषयानुसार न्यूनाधिक सभी को समस्याओं का सामना करना पड़ा है । दत्त सामग्री के आधार पर यह निष्कर्ष निकला है कि एक ही समस्या सब शोधकत्ताओं पर लागू नहीं होती न ही प्रत्येक विषय से सम्बंधित होती है । प्रत्येक शोधार्थी को विषयानुसार हर समस्या का विभिन्न रूपों में सामना करना पड़ता है । शोध समस्या की सफलतापूर्वक सम्पन्नता, अत्यधिक धैर्य, कठिन परिश्रम, आलोचनात्मक एवं मौलिक विचारधारा तथा वैज्ञानिक अनुशीलन पर निर्भर करती है । किसी भी समस्या का उत्तरदायित्व किसी व्यक्ति विशेष पर नहीं डाला जा सकता । ज्ञान के भण्डार को संचित करने के लिए आवश्यक है कि शोध द्वारा ज्ञान के रास्ते में आने वाली हर समस्या का अध्ययन किया जाए ।

घर में ज्ञान गंगा होने से सांगीतिक परिवेश से सम्बंधित शोधार्थियों को विषयानुसार सुझाव व निर्देश प्राप्त होने के कारण समस्याओं से कम जूझना पड़ता है, लेकिन लक्ष्य के प्रति संकल्प और आगे बढ़ने का उत्साह सामान्य वर्ग व विकलांग वर्ग की राह में भी बाधा नहीं बन पाया है । संगीत के क्षेत्र की विशालता एवं गहराई ने शोधकार्य की सीमाओं व शोध की प्रवृत्ति को भी प्रभावित किया है । आज संगीत क्षेत्र में शोध की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ने के कई कारण हैं । संगीत के अध्ययन क्षेत्र में जो सफलता मिल रही है वह शोध का ही परिणाम है । संगीत में शोध, ज्ञान के सूक्ष्म अंग का विस्तृत, सम्पूर्ण एवं नवीन चित्र प्रस्तुत करता है, जिसे संगीत के विषयानुसार क्षेत्र में होने वाले शोधों में देखा जा सकता है, जिसके कारण ज्ञानकोष में ज्ञान वृद्धि के साथ-साथ नवीन विकास भी हो रहा है । प्रत्येक सुशिक्षित व्यक्ति किसी दिशा में विशेषता प्राप्त करना चाहता है । शिक्षा के व्यवसायोन्मुखी हो जाने के कारण डिग्री का महत्व बढ़ गया है । डिग्री से योग्यता का सर्वोच्च प्रमाण-पत्र तो प्राप्त हो ही जाता है, नौकरी पाने के लिए पात्रता भी बन जाती है । संगीत विषय में शोध कार्य एक महान साधना है, जिसके लिए मन और मस्तिष्क को शोधकार्य पर केन्द्रित करके कुछ खोजा तथा अर्जित किया जा सकता है ।

शोधार्थी के संपर्क में बहुत से संगीत के विद्यार्थी ऐसे भी आए हैं जो संगीत विषय में शोध करना चाहते हैं, संगीत में शोध की व्यवस्था केवल विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तक ही सीमित है । महाविद्यालय के योग्य शिक्षकों के लिए ऐसा प्रावधान नहीं है, जबकि अन्य विषयों से सम्बंधित शोधार्थी किसी भी महाविद्यालय के शिक्षकों से निर्देशन प्राप्त कर सकते हैं, जिन्होंने पीएच.डी. की हो । अतः उच्च पदों पर बैठे अधिकारियों से शोधार्थी का निवेदन है कि जैसी सुविधा अन्य विषयों के शोधार्थियों को है, संगीत के विद्यार्थियों को भी ऐसी सुविधा प्राप्त होने की व्यवस्था करें । ऐसा होने से बहुत से शोध करने के इच्छुक विद्यार्थियों को शोध करने का सुअवसर मिल जाएगा व संगीत में शोध की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का स्तर और ऊपर उठ सकेगा क्योंकि संगीत से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों पर शोध कार्य होने पर ही भारतीय संगीत का कोष समृद्ध होगा ।

शोध करते समय प्रतिकूलताओं से जूझते हुए विशेष बात यह नहीं कि शोधार्थी ने क्या हासिल किया । यदि शोधार्थी अंतिम समय तक संघर्ष करने का हौंसला रखते हैं तो इसी में उनकी सफलता है । निष्कर्ष रूप में सुझावों के माध्यम से शोध की प्रवृत्ति में होने वाली जटिलता को कुछ हद तक कम करने का विनम्र प्रयास इस शोध प्रबंध में किया गया है । शोध का आधार, समस्या होने के कारण हम किसी भी समस्या का पूर्ण रूप से निदान तो नहीं कर सकते लेकिन किसी सीमा तक प्रयत्न तो कर ही सकते हैं । समस्या से मुंह मोड़ने से समस्या का समाधान नहीं होता । हमारे मार्ग में आने वाली हर समस्या हमें उन्नति का अवसर प्रदान करती है । सफल होने की उत्कट इच्छा व दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ आगे बढ़ने पर ही लक्ष्य की प्राप्ति संभव है । हमारे कई शोध विषय शुरू में असंभव लगते हैं फिर असंभाव्य किन्तु बाद में हमारी संकल्पशक्ति के कारण ही अवश्यम्भावी हो जाते हैं । ज्ञान तो अथाह सागर के समान है जिसमें डुबकी लगाने वाला कुछ रत्न ही बाहर निकाल पाता है, किन्तु विनम्रता से ग्रहण करने की भावना रखकर ही हम ज्ञानार्जन कर सकते हैं । कुछ कर गुजरने का हमारा विश्वास ही ऐसा संबल है जो हमें गन्तव्य तक पहुंचा देता है ।

'शोध', महत्वपूर्ण और ऊंचे स्तर का कार्य है । भविष्य की ओर आशान्वित होते हुए यही कहा जा सकता है कि समस्याएं होगी, तभी समाधान भी होगा, अतः संगीत की समृद्धि के लिए उच्चानुशीलनयुक्त शोध आवश्यक है । शोधार्थी को यह पूर्ण आशा है कि इस शोध सम्बंधित विषय पर अग्रिम शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए यह शोध प्रबंध एक सोपान सिद्ध होगा ।